IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES
ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 11, November, 2022

Gazal Sugam Sangeet aur Shastriya Sangeet Ka Madhur Milam

Dr. Pratibha Saxena
Assistant Professor, Department of Music, S S (PG) College, Shahjahanpur, UP

सार :–

शास्त्रीय संगीत उसे कहते है जिसमें गायन वादन और नृत्य से निर्धारित कुछ नियम होते है और जिनका पालन करने से ही वह संगीत शास्त्रीय संगीत के रूप में आता है। इसमें जहॉ एक और राग के नियमों का पालन होता है वही ताल के बंधन में राग को गाया जाता है। शास्त्रीय संगीत नाम से ही पता चलता है कि यह कला है जिसका एक निश्चित शास्त्र है। यह मौखिक एवं प्रदर्शनात्मक होते हुये भी एक विधा के माध्यम से पड़ने और पड़ाने का विषय रहा है। समस्त भारतीय विधाओं के भॉति संगीत विधा का उद्देश्य भी मौखिक सर्जन की क्षमता को विकसित करना है।

शास्त्रीय संगीत की तरह सुगम संगीत भी संगीत की एक ऐसी विधा है जिसे जनमानस के द्वारा आसानी से ग्रहण किया जाता है संगीत का अर्थ है वह संगीत जो सीखने मे आसान है और जिसे सरलता से गाया बजाया जाये सुगम संगीत कहलाता है। सुंगम संगीत को किसी शास्त्रीय संगीत के नियम या किसी खास नियमों मे नही बॉधा गया है जो लोगो के प्रिय है सुगम संगीत कहलाता है।

शास्त्रीय संगीत वह है जिसमें गायन, वादन और नृत्य के कुछ निर्धारित नियम होते है और जिसका पालन करने से ही वह संगीत, शास्त्रीय संगीत का रूप धारण करता है इसमें जहॉ एक ओर राग के नियमों का पालन होता है वही ताल के बंधन मे ही राग को गाया बजाया जाता है शास्त्रीय संगीत नाम से ही पता चला है यह एक कला है जिसका अपना एक निश्चित शास्त्र है। वह मौखिक एवं प्रदर्शनात्मक होते हुये भी एक विधा की भॉति अध्ययन और अध्यापन का विषय रहा है सम्पूर्ण भारतीय विधाओं की भॉति संगीत विधा का उद्देश्य भी छात्र–छात्राओं में मौखिक सर्जन की क्षमता विकसित करना है।

इसके विपरीत सुंगम संगीत, संगीत की एक ऐसी विधा है जिसे जनमानस के द्वारा आसानी से ग्रहण किया जाता है। सुगम संगीत को भाव संगीत, फिल्म संगीत, सरल संगीत, लाईट म्यूजिक आदि भी कहा जाता है। यह ऐसी कला है। जो एक मन व हृदय के छोर से उपतजी है तो दूसरे का अंतस्थल इसका छोर पकड़ कर उसके अंकुरण को सींच देता है।

सुगम संगीत भारतीय संगीत जिसमें जिसे सहजता से सीखा और बजाया जा सके जिसे निश्चित नियमों मे बॉधा नही गया है, जो लोक मे प्रिय हो सुगम संगीत कहलाता है।

शास्त्रीय संगीत व गज़ल सुगम संगीत का संगम :– वर्तमान भारतीय संगीत में दो प्रकार के गीत भेदों का प्रचार है। एक गीत भेद तो वह है, जिनके गायन शैलियो मे राग व स्वर की प्रधानता है जैसे ख्याल, तराना, चतुरंग इत्यादि, दूसरा प्रकार गीत का वह भेद है जिनमें शब्दों की प्रधानता जैसे भजन, गीत इत्यादि। इन गीतो को भेदों की दृष्टि से पहले प्रकार में राग की सर्वोत्तम प्रधानता तथा राग आश्रित शास्त्रीय नियमबद्ध होने से इन्हे ''शास्त्रीय संगीत'' कहा जाता है। इसके विपरीत दूसरे प्रकार के गीत गायन विधि मे शब्द पद की प्रधानता रहती है तथा इसमें रागो का प्रयोग तो होता है। परन्तु वह पूर्णता राग और शास्त्रीय रचना मे नियमबद्ध नही होती इसलिये इसे सुंगम संगीत की संज्ञा दी गई है।

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 11, November, 2022

शास्त्रीय संगीत की उचित प्रशंसा करने के लिये संगीत का थोड़ा बहुत ज्ञान होना आवश्यक होता है। हम चाहे उसकी बारीकियों को ना समझे, किन्तु कम से कम इतना तो जानना आवश्यक है कि राग गायन मे आलाप, तान क्या है। शास्त्रीय संगीत में इसका कितना महत्व है। गायक अपनी कल्पना शक्ति के आधार पर नये स्वर समुहो की रचना करता है और उसके प्रत्येक स्थल पर लय ताल की सीमा में निबद्ध रहना पड़ता है। शास्त्रीय संगीत का आनन्द लेने के लिये उसकी क्रियाओं का ज्ञान आवश्यक है किन्तु सुगम संगीत की प्रशंसा के लिये लेशमात्र ज्ञान की आवश्यकता नही होती। इसलिये साधारण जनता सुगम संगीत से बहुत प्रभावित होती है।

भारतीय संगीत जगत में 'ग़ज़ल' फारसी संगीत की देन है। ग़ज़ल संगीत की वह विधा हैं। जो आशिक और माशूक के प्रेमालाप से ओत–प्रोत रहती है। भाषा प्रायः उर्दू अथवा फारसी रहती है। साहित्य और संगीत का समान प्रयोग इसमें पाया जाता है। जितनी ही सुन्दर इसकी रचना होती है, उतनी सुन्दर इसकी धुन भी यही कारण है कि सुगम संगीत की कुछ ही अत्यन्त लोकप्रिय विधाओं में से यह एक है।

'ग़ज़ल' को अपने सांगीतिक रूप में शास्त्रीय संगीत एवं सुगम–संगीत के बीच का संगीत स्वीकारा जा सकता है। गज़ल के सांगीतिक जहॉ सुगम–संगीत के स्वरूप में संघटित होते है, वही उसमे राग–विशिष्ट, ताल–लय, आलाप–तानें और उनमें शास्त्रीय संगीत के सूक्ष्म तत्वों यथा–मीड़, गमक, मुर्की, खटका, कण–स्वर इत्यादि का समावेश होता है।

ग़ज़ल की सांगीतिक बंदिश किसी न किसी राग पर आधारित जरूर होती है। जब श्रोता ग़ज़ल की सांगीतिक प्रस्तुति सुनते है तो उनमें से अधिकांश श्रोता अनजानें में ही उस राग के स्वरूप से परिचित हो जाते है। जिस राग में ग़ज़ल की सांगीतिक बंदिश की गई होती है। सामान्यतः ग़ज़ल गायक ग़ज़ल की सांगीतिक प्रस्तुति से पहले जिस राग में ग़ज़ल की बंदिश की गई होती है। उस राग का नाम श्रोताओं को बताते है। इस प्रकार से राग का नाम तथा उसका स्वरूप श्रोताओं के दिल और दिमाग में ग़ज़ल के जरिये अपनी पहचान बना लेता है।

पहले ग़ज़ल गायक ग़ज़लो को राग–रागनियों में गाया करते थे। उस समय ग़ज़लें अच्छे रागों में गाई जाती थी उसकी तालें भी अच्छी होती थी जैसे झपताल, सवारी, दीपचन्दी इत्यादि। प्रतिभाशाली ग़ज़ल गायक की ग़ज़ल शास्त्रीय संगीत के अंदाज में गाई जाती थी। जिन रागों में यह ग़ज़ले गाई जाती थी वह सही ढंग से गाई जाती थी और उसमें अन्य रागों की मिलावट नही होती थी। उसमें भाव के वातावरण को किसी राग में गाकर सुरक्षित रखना और ढंग से लोकप्रिय बनाये रखना था।

निष्कर्षः– शास्त्रीय संगीत भारत की बहुत पुरानी विधा है जो कि बहुत किलिष्ठ मानी गई है। हम कितना भी समझ ले यह उससे बहुत ज्यादा आगे है। शास्त्रीय संगीत अथाह सागर है जितना डूबों उतना ही डूबते जायेगे। यह समुद्र में मोती के समान है। शास्त्रीय गायन सुर प्रधान होता है। शब्द प्रधान होता है। इसमें महत्व सुर का होता है। इसका शास्त्रीय संगीत सीखें हुये ही श्रोता समझ सकते है। जो लोग सीखे नही है। वह लोग स्वाभाविक ही उब भी जाते है। पर इनके उबने का कारण उस संगीतज्ञ की कमजोरी नही बल्कि शास्त्रीय संगीत की जानकारी का अभाव है। इसलिये लोग शास्त्रीय संगीत से ही जुड़ी दूसरी विधा को सुनते है। क्योंकि अगर जानकारी नही है तब भी वह कानो को अच्छा लगता है। इसी प्रकार सुगम संगीत की ग़ज़ल एक ऐसी विधा है। ग़ज़ल संगीत की एक परिपूर्ण शैली है। इसमे किसी प्रकार के राग का श्रोताओं का, स्थान का, संगत आदि बंधन अनिवार्य नही है। थोड़े ही समय से अधिक आनन्द प्रदान करता है। ग़ज़ल एक ऐसी विधा है जिसे गायक थोड़ी सी साधना के पश्चात् गा सकता और अशिक्षित और शिक्षित दोनो प्रकार के श्रोताओं का रिझा सकता है।

अन्त में यही निष्कर्ष निकलता है कि ग़ज़ल सुगम संगीत की विधाओं में सबसे लोकप्रिय विधा है जो अपने आप में शास्त्रीय संगीत की खूबियों को समाये हुये है।

सन्दर्भ सूची

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 11, November, 2022

1. सुगम संगीत पृ0 19–22
hi.m.wikipedia.org>wiki>
2. संगीत मैनुअल पृ0 436
Dr. Mritunjaya Sharma
Prof. Ram narayan Tripathi
3. राग परिचय पृ0 169 प्रो0 हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
4. शास्त्रीय संगीत– विकिपीडिया
Whi.m.wikpedia.org>wiki>
5. संगीत मैनुअल पृ0–437
Dr. Mritunjaya Sharma
Prof. Ram narayan Tripathi
6. राग परिचय पृ0 170 प्रो0 हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव